अंक ४१ ★ सितम्बर-२०१०

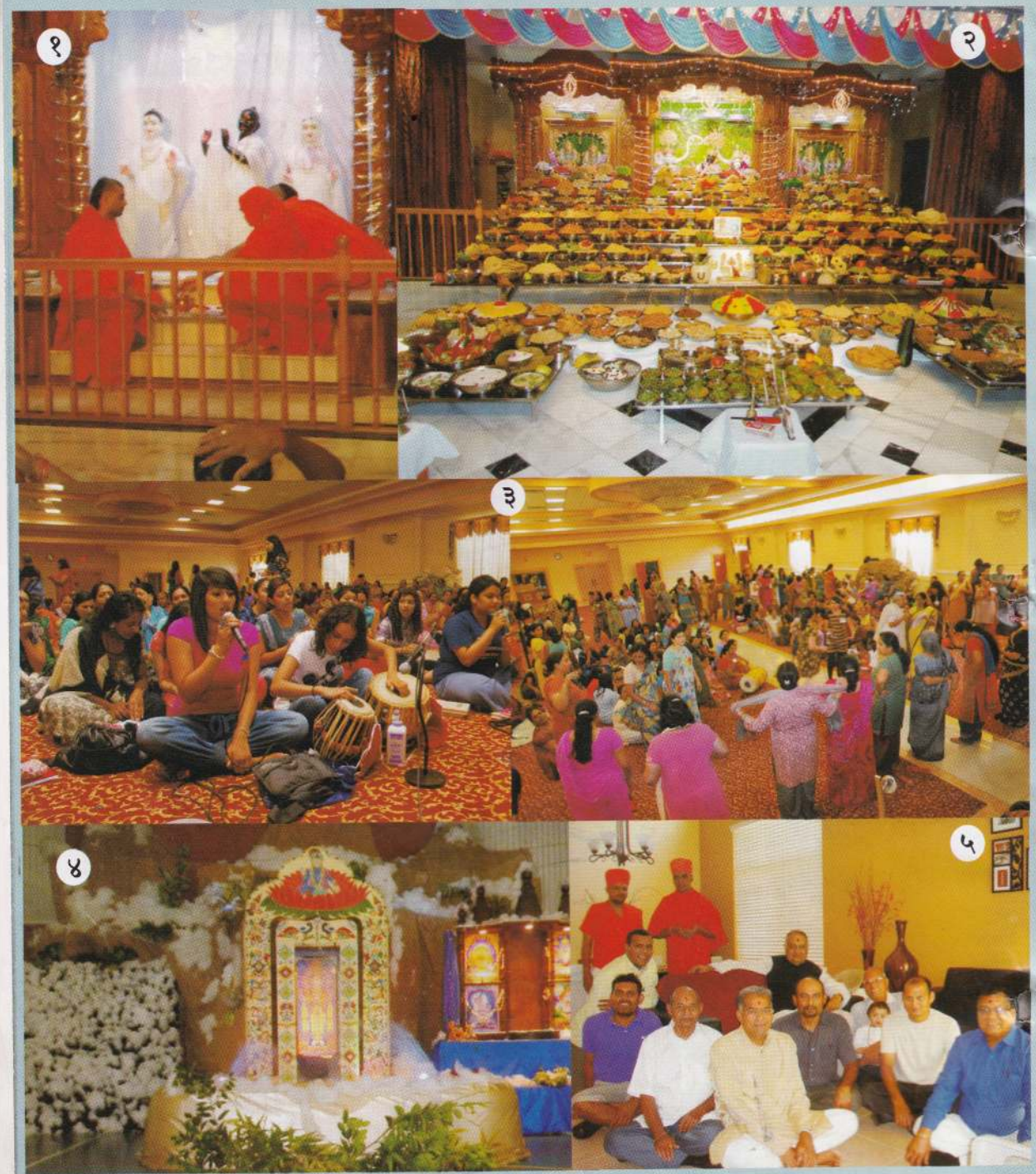
श्री स्वामिनारायण

मुल्य रु.५-००



दिव्यता एवं अलौकिकता के
झरणा समान
श्री स्वामिनारायण म्युझियम

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.



(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में ठाकुरजी का षोडशोपचार विधिसे अभिषेक करते हुये स्वामी जयप्रकाशदासजी, शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (नारायणपुरा महंत) तथा शास्त्री स्वामी हरिप्रसाददासजी। (२) शिकागो मंदिर में अन्नकूट दर्शन। (३) चेरीहील श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े गादीवालेश्री की शुभ उपस्थिति में बहनों का भव्य सत्संग शिबिर तथा बहनो द्वारा विविधकार्यक्रम की झलक। (४) एडीलेट (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में हिंडोला दर्शन। (५) अमेरिका के फिनिक्स (एरिझोना) में महेशभाई के घर दर्शन देने पधारे उस समय साथ में पू. ब्रह्मचारी राजेश्वरानंदजी, पू. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी तथा महेशभाई, विशालभाई, बलदेवभाई, घनश्यामभाई, सोमाभाई इत्यादि हरिभक्त।



(१) लेस्टर यु.के.
निरीक्षण करते हुये
भा में आशीर्वाद
था समूह महापूजा



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ४१ सितम्बर-२०१०

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम्	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	कार्य सिद्धि के लिये तिलक-चंदन आवश्यक	४
४.	श्री नरनारायणदेव माहात्म्य	७
५.	मद्यकुं पीवत नहि बड भाग्य	८
६.	श्रावणी पूर्णिमा	९
७.	म्युझियम मेरे जीवन की अन्तिम वासना है - पूज्य बड़े महाराजश्री	१०
८.	श्रीहरि के अपर स्वरुप तो अंतर्यामी ही होंगे	१२
९.	चेरीहील न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में महिलाओं का सत्संग शिबिर	१३
१०.	सत्संग बालवाटिका	१५
११.	भक्ति सुधा	१७
१२.	सङ्गसंग समाचार	२०

अस्मदीयम

१५ अगस्त २०१० का सुवर्ण दिन अर्थात् आज के दिन अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ विशाल हिन्दुस्तान देश। ६ दशक पहले यह देश झंझावात, दुष्काल, भूकंप, अतिवृष्टि, अनावृष्टि सूनामी जैसे अनेकों प्रकोपों का सामना किया है। ये सभी आपत्तियां ईश्वराधीन हैं। इस में आज का वैज्ञानिक कुछ भी कर नहीं सका। बल्कि उसके सामने घुटने टेकलिये हैं। लेकिन दु:ख की वात तो यह है कि अपने अन्दर के शत्रु आतंकवादी, नक्सलवादी, माओवादी इत्यादि जैसी विकास में गति अवरोधक शक्तियां कामकर रही हैं। अनेक निदोर्षो को बेरहमी से मार डालते रहे हैं। फिर भी इनके हृदय में लेशमात्र भी पीड़ा नहीं हो रही है। इनके हृदय में मानवता नाम की कोई चीज ही नहीं है। इनका कोई नियम नहीं है। इन्हें किसी की डर नहीं है। जिन्हे ईश्वर का भी डर न हो वह मनुष्य नहीं राक्षस से भी बदतर हैं।

भगवान श्री स्वामिनारायण के समय में अहमदाबाद के वर्तमान खोखरा विस्तार में कुछ साधु बाबा अनेक चेलाओं के साथ अलग अलग स्थानों पर रात-दिन गांजा, चरस, अफीम, दारु इत्यादि का अड्डा बनाकर सभी को परेशान करते थे, उनके सामने कोई आंख भी नहीं उठापाता था। उन्हें खबर पड़ी कि अहमदाबाद में भगवान श्री स्वामिनारायण के आगमन से लोगों में जागृति आरही है। इसलिये उन्हें शान्त करना होगा, उनके साधुओंको परेशान करना होगा। जिनके संतो में यह सामर्थ्य था कि सारे ब्रह्मांड को एक चुटकी में बंद कर सकते थे। लेकिन महाराज की आज्ञा थी कि चाहे जितना भी कष्ट आवे, गाली दें फिर भी सहन करना है। सामने उनका नुक्शान नहीं करना है। इसलिये वे अपने संतो को खूब परेशान करते थे, फिर भी हमारे संत सहन करते रहे। हद से जब पार हो गये कि वे अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान श्री स्वामिनारायण के मारने के लिये आये। यहीं उनका काल उन्हे बुलाकर लेआया। उनका अंतिम परिणाम जो हुआ वह सभी जानते हैं। इसी तरह अपने देश में जितने आंतकवादी संगठन है उनका अंतिम परिणाम तो अध:पतन ही है। हम भगवान श्री स्वामिनारायण के आश्रित हैं। इसलिये हमारा अधिक से अधिक समय भगवान की भजन भक्ति में व्यतीत होना चाहिये। जिससे इस जीव का अध:पतन नहीं हो और सभी प्रकार से श्रेय हो, कल्याण हो, ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१०)



५. प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १३ वाँ जन्मोत्सव अपने शुभ सानिध्य में मनाये।

८. श्री कल्पेशभाई जी. चौकसी के यहाँ पदार्पण, थलतेज।
श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा श्री स्वामिनारायण म्युझियम प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया कथा पारायण के प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्रीजी टायर्स स्फोर्ट में पदार्पण सोलारोड।

१५. गोझारिया गाँव में पदार्पण।

१७. श्री गोपालभाई पटेल के यहाँ कुजाड़ गाँव में पदार्पण।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पारायण की पूर्णाहुति के प्रसंग पर पदार्पण।

१९. अ.नि.प.भ. झवेर पटेल (मेडावाला) के स्मरणार्थ आयोजित श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन प्रसंग पर पदार्पण, श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा।
श्री कनुभाई पूनाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, महेसाणा।

२१. डॉ. जी. के. पटेल के यहाँ पदार्पण, महेसाणा।

२२. श्री रतीभाई जेरामभाई देसाई के यहाँ पदार्पण, नरोड़ा।
श्री भीखाभाई मूलजीभाई कयाड़ा के यहाँ पदार्पण, नरोडा।
श्री बाबुभाई टपुभाई आंसोदरिया के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, निकोल रोड।

२३. गामडी (जेतलपुर देश) गाँव में पदार्पण.

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया, पदार्पण।

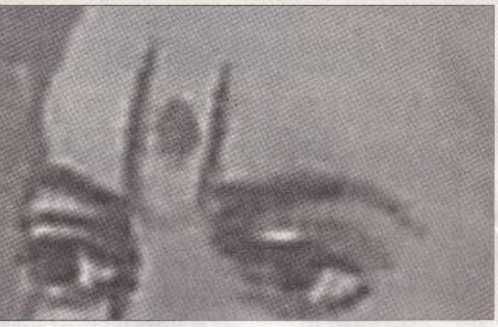
२५. श्री रसिकभाई बबलदास गज्जर के नूतन ओफसेट मशीन युनिट के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, शाहीबाग।

२६. श्री रसिकभाई दयालजीभाई सोनी के घनश्याम ज्वेलर्स शो-रुम के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा।

२७. से ६. सितम्बर अमेरिका के धर्म प्रवास पर पदार्पण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-३० ● शयन आरती २०-३०

कार्य सिद्धि के लिये तिलक-चंदन आवश्यक



- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने ऋषिमुनियों ने सभी प्रकार की सिद्धि के लिये मस्तक पर तिलक-चन्दन करने की परंपरा बनाई है । जिसे सफलता का पूर्ण प्रतीक माना जाता है । किसी भी कार्य की सिद्धि में अगमवांणी तिलक से समझा जा सकता है।

स्नानं दानं तथा होमो देवता पितृकर्म च ।
तत्सर्वं निष्फलं याति ललाटे तिलकं विना ॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि, स्नान में, दान करते समय, तपश्चर्या करते समय, जप के समय, पूजा के समय, प्रार्थना के समय, यज्ञ करते समय, किसी भी सत्कर्म के समय, पितृकर्म, माला जपते समय, देवदर्शन, नमस्कार करते समय तिलक आवश्यक है, न होने से सभी कर्म निष्फल जाता है।

पूजा आरंभ के समय ब्राह्मण प्रथम यजमान के भाल में तिलक करते हैं, "यजमान भाले तिलकं कुर्यात्" अर्थात् यजमान अपने मस्तक पर तिलक धारण करे।

भगवान की दशोपचार पूजा हो या षोडशोपचार पूजा हो मस्तक पर चन्दन होना आवश्यक है।

शरीर का साम्राज्य मस्तक से चलता है। इसलिये राजा के पद पर बैठने वाली ठीक उस यजमान की स्थिति होती है, जैसे किसी राजा का राज तिलक होता है । जिसका तिलक किया गया, उसे अधिपति कहा जाता है । मानव की शरीर में देव, दानव, राक्षस, पंडित, मूर्ख इत्यादि को उसके मस्तक के चन्तन (तिलक) से समझा जा सकता है । यहीं से स्मरण भक्ति, दृष्टि, श्रवण, संवेदना, अन्य अदृष्य क्रियाओं का संचालन होता है । यहीं पर षट्चक्र (आज्ञा चक्र) भी है। जो ज्ञान चक्र से चेतना का संचालन होता रहता है। आज्ञा चक्र तीसरा नेत्र कहा जाता है। इसी को दिव्य नेत्र भी कह सकते हैं । योगाभ्यास से निरावरण दृष्टि मिलती है। आज्ञाचक्र पर तिलक करने से ओजस्विता बढती है । साथ में आत्म निष्ठा, आत्मज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती रहती है।

मस्तक पर चंदन, कुमकुम का तिलक चन्दन करने से शीतलता आती है, जिससे मन प्रसन्न रहता है । मस्तक पर उदासीनता के दो कारण है एक "सेरोटोनिन" तथा दूसरा "बीटाएन्डोरफीन" नामक रसायन की कमी होने से उदासीनता उद्वेग, नकारात्मक विचार आते है। यदि मस्तक पर तिलक-चन्दन किया जाय तो इन सभी से मुक्ति मिल जायेगी।

सामाजिक कार्यो में, लग्न विधिमें, चन्दन चर्चित भाल करने का नियम है। माँ-बाप को भी तिलक-चन्दन इस शुभ अवसर पर किया जाता है। जब बहु घर आती है उस समय सास चन्दन इत्यादि द्वारा स्वागत करती है। विदाई के समय भी तिलक करके सन्मान किया जाता है इसी तरह किसी भी कार्य की प्रगति में चन्दन-तिलक किया जाता है। हारे हुये व्यक्ति को कोई चन्दन तिलक नहीं करता। इसलिये इसका सदा ध्यान रखना चाहिये कि मस्तक पर तिलक-चन्दन के विना घर से बाहर नहीं निकलना चाहिये । उसी में विजय दिखाई देती है । परीक्षा में जो विद्यार्थी जाता है उसे

चन्दन करके विदा किया जाता है। यात्रा प्रस्थान के समय भी तिलक किया जाता है। युद्ध के अवसर पर सैनिकों को तिलक किया जाता है। जीतकर आये हुये सैनिकों का तिलक विजय का प्रतीक है। अर्थात् सभी प्रकार की मनोकामना को पूर्ण करने की शक्ति तिलक-चन्दन में है। शकुन तथा अपशकुन के विषय में देखा जाय तो यदि रास्ते में ब्राह्मण तिलक किये हुये मिलें तो शुभ फल समझना चाहिये, इसी तरह यदि मस्तक पर चन्दन नहीं हो तो अशुभ मानना चाहिये। कुछ लोग की नजर लगती है, ऐसे व्यक्ति से बचाने का कार्य भी कुमकुम करता है। मलिन शक्ति से रक्षा होती रहती है।

शुद्ध कुमकुम में हल्दी होती है। जो आरोग्य तथा सौन्दर्यता का प्रतीक कहा गया है। विवाह प्रसंग पर हल्दी लेपन की परंपरा वर्षो से हिन्दु समाज में चली आ रही है।

पत्नी का सौभाग्य सिन्दूर (कुमकुम) है। यदि स्त्री के मस्तक पर हो तो पति के विद्यमानता को प्रगट करता है।

भविष्य पुराण में लिखा है कि -

सत्यं शौचं जपो होम स्तथा देवादि पूजनम्।
तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यः त्रिपुण्ड्रंन धारयेत्।

प्रयाग पारिजात में लिखा है -

ऊर्ध्व पुण्ड्रं यदा कुर्यात भष्मना तु त्रिपुन्ड्रकम्।
उभयं चन्दनेनैव अभ्यङ्गोत्सव रात्रिषु॥

ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्या कर्म समाचरेत्।
अकृत्वा भाल तिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्॥

अर्थात् सन्ध्या, सत्कर्म, सत्य, जप, तप, दान, होम देवादिपूजन, वंदन, नमस्कार, तिलक के विना पुण्य कारक नहीं होता।

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के श्लोक ४२-४३ में गोपीचंदन का तिलक ऊर्ध्वपुण्ड्र तथा राधालक्ष्मीकी प्रसादी भूत, कुमकुम मध्य भाग में करने की आज्ञा की है। वैष्णव धर्म की परम्परा में ऊर्ध्वपुण्ड्र करने का विधान है। श्रीजी महाराज वैष्णवी परम्परा को स्वीकार करके तिलक लगाकर बीच में कुमकुम करने की आज्ञा की है। इससे उद्धवं सम्प्रदाय की पहचान अलग रुप से भासित होती है। तिलक को भगवान के दोनो युगल चरणों का प्रतीक तथा कुमकुम को लक्ष्मीजी का प्रतीक माना जाता है। अंक की दृष्टि से देखें तो १०१ के रुप में दिखाई देगा। अर्थात् ऊर्ध्वपुण्ड्र सहित कुमकुम का चंदन करने वाले को एकसौ एक प्रतिशत भगवान स्वामिनारायण का आश्रित है यह माना जायेगा। जो एक सौ एक प्रतिशत समर्पित होगा उसी का भगवान योगक्षेम करके उसी का पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध करेंगे।

सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान का खूब महत्व है। देव-ईश्वर, पुरुष, अक्षर तक मुक्त श्रीहरि के वचन से ही उनकी कोटि तक पहुँच पाये हैं. श्रीहरिने ही ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक-कुमकुम करने की आज्ञा की है। ऐसी सरल सर्व सामान्य सर्वोपयोगी वचन का पालन न हो सके तो कठिन वचन का पालन कैसे संभव है। महाराज का एक वचन भी फालतू नहीं था, जो अति कठिन था उसे भी सरलता से पालन करने की उपाय बताते थे। प्रत्येक संप्रदाय में उनके इष्टदेव, सिद्धान्त, तलक, शास्त्र, आचार्य, दीक्षा, मंत्र, साधु तथा आश्रितों की परिभाषा निश्चित की जाती है। जिससे उसकी पहचान हो सके, प्रचार-प्रसार हो सके। समर्पण का भाव भी इसी में निहित है। इसी से सम्प्रदाय की प्रसिद्धि होती है। अनुयायी को इसका लाभ मिलता है। जगत में अपने सम्प्रदाय की सिद्धि तथा प्रसिद्धि एवं इसके अनुयायियों के लाभ में सम्प्रदाय का प्रतीक ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक एवं कुमकुम लेप महत्व का स्थान रखता है। जिस तरह पूजा के प्रारंभ में तिलक किया जाता है। उसी तरह सत्संग में प्रवेश तभी मिलेगा जब तिलक-चन्दन होगा। तिलक के विना सत्संग भोजन में लवण के विना की स्थिति है। जिस तरह कोई ब्रांड कम्पनी की पहचान उसके सिम्बल से होती है। खरीदने वाला सिम्बल देखकर ही खरीदता है, उसी में उसको विश्वास होता है। इसी तरह

अपने सम्प्रदाय में भी अपने इष्टदेव की पहचान शरीर के मुख्य स्थान मस्तक पर लगे तिलक-चन्दन से होती है।

अपने ऋषि-मुनियों ने जो मार्ग दर्शन दिया जो लिखा वहीं संप्रदाय की पहचान अपने अनुयायियों में होना आवश्यक है । इसके विना सम्प्रदाय की तथा व्यक्ति की प्रगति नहीं होती । सम्प्रदाय के प्रचार में यह महत्व का स्थान है । जो तिलक-चन्दन से प्रारंभ होता है। संप्रदाय की शोभा तिलक-चन्दन है । भावपूर्वक किया जाय तो श्रीजी महाराज की अन्य सभी आज्ञायें सरलता से मन में स्थिर होने लगती हैं । कोई विद्यार्थी परीक्षा देने जाय अथवा किसी नौकरी में इन्टरव्यू देने जाय तो मस्तक पर तिलक-चन्दन होने से अनुकूल वातावरण हो जाता है । इसके अनेकों उदाहरण हैं । तिलक-चन्दन अस्त व्यस्त नहीं होना चाहिए व्यवस्थित होना चाहिये । संतो ने तिलक चन्दन का माप बताया है। अनामिका अंगुली से कुमकुम लगाना चाहिये । हृदय में भगवान की मूर्ति को धारण करके स्थूल शरीर के मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र-तिलक रुपी भगवान को धारण करना चाहिये । इसके करने से आध्यात्मिक व्यावहारिक कार्यो में सरलता मिलती है । ऐसे भक्त के हृदय में धीरे-धीरे भक्ति परिणमित होने लगती है । सर्वोपरि भगवान, सर्वोपरी तिलक-चन्दन । कितने मनष्वी लोग प्रश्न करते हैं कि कुमकुम करने में सबकुछ आजाता है क्या ? दूसरी आज्ञा का पालन कहते तो अच्छा रहता ? तो इसका उत्तर है कि, कुमकुम लगाने से सबकुछ उसमें भले नहीं आता हो तो भी भगवान के आज्ञा का पालन तिलक-चन्दन से आरंभ तो होता ही है । यही सनातन सत्य सिद्धान्त है । तिलक-चंदन के बिना सत्संगी यदि सत्संग करता है तो भगवान उसे बल नहीं देते । उसकी आध्यात्मिक यात्रा में विराम आने लगता है । तिलकावली वाला व्यक्ति भगवान से विभूषित होता है ? इसलिए तिलक-चन्दन करके ही बाहर निकलें, जिससे भगवान श्री स्वामिनारायण के संप्रदाय की शोभा बढ़े । वात करते है "तन, मन, धन जाय वारी" लेकिन मस्तक पर तिलक-चन्दन को धारण करने की भी जगह भगवान के लिये नहीं है । ग्रीष्म ऋतु के दिन में भी तिलक-चन्दन को धारण करें । बहना का स्थान नहीं ।

श्री स्वामिनारायण मासिक के जो नये आजीवन सभ्य बनेंगे उन्हें सुंदर उपहार मिलेंगे

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अपने प.भ. हार्दिककुमार दशरथभाई पटेल (वडुवाले अभी ओस्ट्रेलिया) की तरफ से श्री स्वामिनारायण मासिक के जो अब नये सभ्य बनेंगे उन्हें शिक्षापत्री नित्य नियम के साथ वजनदार पुस्तिका भेट दी जायेगी । नोट: जो नये आजीवन सभ्य बनेंगे उन्हें ही भेट दी जायेगी ।

गत जनवरी २०१० के अंक में प्रकाशित लेख "पेश्वाई गई और सहजानंद स्वामी अहमदाबाद में पुनप्पधारे" । उसकी वास्तव में तिथि तथा तारीख फाल्गुन कृष्णपक्ष-३ रवि ता. २४-२-१८२२ है ।(भुपेन्द्र धोलकिया, विरमगाँव वाले)

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग के संचालको को ज्ञात करवाना है कि प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से इस वर्ष परीक्षा मात्र २ भागों में ली जायेगी । (१) बाल सत्संग (२) किशोर सत्संग जिसकी पुस्तिका प्रकाशित हो गयी है । हमारे कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग कार्यालय में से मिलेगी । आगामी परीक्षा ता. २६-१२-२०१० के रविवार को ली जायेगी । अन्य माहिती के लिए धार्मिक शिक्षण विभाग कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद संचालकश्री [illegible]ई देवाणी का संपर्क किया जाय ।

श्री नरनारायणदेव माहात्म्य

- शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदावाद)



(गतांक से चालू)

भक्तों ! जब किसी को कोई वस्तु मिलती है अथवा कोई उसका बखान करता है तब उसमें अभिमान आने लगता है। देवों को भी अपने राज्य का अभिमान होता है। संपत्ति का सभी को अभिमान होता है।

भक्तों ! एकवार देवराज इन्द्र को कुविचार आया । श्री नरनारायणदेव के तप में शंका हुई।

हे भक्तों ! जब भी अपने मन में संकल्प हो कि यह देव या संत, भक्त खराब है या ढोंग करता है, तब यह समझना चाहिये कि मुझसे अभागा कोई नहीं है। कारण यह कि कुसंगी के संग से अपने संस्कार के ऊपर कुसंग का संस्कार होने से संत में या भक्त में अवगुण दिखाई देने लगता है। यदि भूल में भी संत या भक्त में अवगुण देखने का अपराधहुआ तो भगवान का अपराधहुआ समझना चाहिये। श्रीजी महाराज कहते थे कि संत मेरी मूर्ति है। उन्हीं में मैं रहता हूँ। जब महाराज संतो में अवगुण देखने की मनाई किये हैं तो इन्द्र साक्षात् अक्षराधिपति श्री नरनारायणदेव में शंका कर रहे हैं।

इन्द्र को ऐसा हुआ कि कहीं भगवान तप करके मेरा इन्द्रासन तो नहीं लेलेंगे। तप में विघ्न करने के लिये इन्द्र ने कामदेव को भेंजा। कामदेव भगवान की महिमा नहीं जानते थे। इसलिये अप्सराओं के सहयोग से वसंत मंद-वायु-रुपी सैन्य से श्री नरनारायणदेव को आक्रमण कर दिया। अप्सरायें कटाक्ष रुपी बाणों से भगवान को बीधने लगी। आदि देव श्री नरनरायण इन्द्र के अपराधको जान गये। गर्व रहित कामदेव श्राप के भंय से कांपने लगे। यह देखकर भगवानने कहा हे कामदेव ! हे वायु ? हे देवांगनायें ? आप लोग डरो नहीं हमारा अतिथि सत्कार स्वीकार करो। आप सभी के विना यह आश्रम सूना लगता है।

हे भक्तों ! विचार तो करो, भगवान कितने दयालु हैं। "अति दयालु रे स्वभाव छे, स्वामिनो। भगवान का अति दयालु स्वभाव है। उनके तप को भंग करने के बाद भी उन सभी का सत्कार करके आश्रम में रहने को कहते हैं। यदि साधारण जीव हो तो खराब बोलने वाले की हत्या कर देता है। जो सहन नहीं कर सके वह जीव है, जो सहन करे वह भगवान है भगवान बहुत सहन किये हैं। इसीलिये उन्हें भगवान कहा जाता है। कामदेव भगवान की दयालुता पर पश्चात्ताप करते हैं।

देवता भगवान से कहते हैं कि हे प्रभु आप बड़े तपस्वी एवं दयालु हैं। आपकी सेवा करने वालों को देवता लोग परेशान करते हैं। हे प्रभु ! आपके भक्त देवों के स्थान स्वर्ग का अतिक्रमरण करके आपके परमपद को प्राप्त करते हैं। उस समय देवताओं द्वारा विघ्न उपस्थित किया जाता है। यज्ञ में इन्द्रादि देवों को स्वत: भाग भी मिलता रहता है। फिर भी ऐसे लोगों को देवता विघ्न नहीं करते। सच्चे भगवान के भक्तो को देवता लोग विघ्न करते रहते हैं फिर भी भक्त विघ्न के मस्तक पर पैर रखकर परम पद को प्राप्त करलेते हैं। कारण यह कि हे प्रभु ! आप स्वयं भक्तों के रक्षक हैं। कामदेव इत्यादि देवता भगवान से कहते हैं कि हे प्रभु! हम तो भोग भोगने में ही लगे रहते हैं।

देवता स्तुति कर रहे थे उसी समय भगवान अपने योगबल से अद्‌भुत रुप लावण्यवाली रमणियों को उत्पन्न कर दिये जिससे देवी देवताओं का गर्व खत्म हो जाय। उन समणियों से सेवा करवाते हुये बताया। देवता लोग साक्षात् लक्ष्मीदेवी जैसी स्त्रियों को देखकर काले पड़ गये। कामदेव भी उन स्त्रियों को देखकर मुग्धहो गये। तब भगवान हंसते हुये कहे कि इसमें से जो स्वर्ग में उपयोगी हो उन्हें आप मांग सकते हैं। पुन: प्रभु ने कहा हे देवों ! ये सभी मेरी जंघा से उत्पन्न हैं इन्हे स्वर्ग में लेजाकर इन्द्र को देना। भगवान के उस (जंघा) में से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम उर्वशी रखा गया। उर्वशी नामक अप्सरा को प्राप्त करने के लिये देवता आगे बढे। उर्वशी को लेकर तथा भगवान को प्रणाम करके देवता स्वर्ग पधारे। वहां सभा में इन्द्र को प्रणाम करके भगवान नारायण के सामर्थ्य को बताया। यह वृन्तान्त सुनकर इन्द्र विश्मित रह गये। इस तरह भगवान नरनारायणदेव का चरित्र तीनो लो क में गाया जाने लगा।(क्रमश:)

मद्यकुं पीवत नहि बड भाग्य

- शा. अभयप्रकाशदासजी गुरु
स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

स.गु. प्रेमानंद स्वामी मदिरापान का भी निषेधकिये हैं । लगभग प्रत्येक धर्मशास्त्रों में जिस तरह मांस भक्षण का निषेधमिलता है ठीक उसी तरह मद्यपान का भी निषेधबाताया गया है।

शिक्षापत्री के १५ वें श्लोक में भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि तीन प्रकार की सुरा तथा इग्यारह प्रकार के मद्य को भले देवता को निवेदित किया गया हो तो भी उसे ग्रहण नहीं करना चाहिये । यदि औषधमें भी मदिरा-मांस का उपयोग किया गया हो तो उसे भी ग्रहण नहीं करना चाहिये ।

सत्संगिजीवन के पांचवे प्रकरण में तथा तिरालिसवें अध्याय में स्वयं श्रीहरिने शिवराम विप्र से महापापों में पाप मद्यपान को बताया है।

मुश्लिम धर्म के ग्रंथ "कुरान के ९० अध्याय में कहा गया है कि हे इमामवालों तुम सभी दारु नहीं पीना। शराब पीने से तुम्हारे में सैतान का प्रवेश होगा । फिर वह दुश्मनावट पैदा करेगा । शराब तथा जूआ दोनो नापाक चीज हैं । शराब पीने से राग-द्वेष उत्पन्न होता है। फिर भी तूं पीयेगा तो खुदा की बंदगी तथा जिक्र से शैतान, तुझे दूर करदेगा । इसलिये मदिरा जैसी नापाक वस्तु का सेवन कभी मत करना ।

बाइबल में इसु ने कहा है कि जो मदिरा पान करता है वह मेरा रक्तपान करता है । यदि तू मदिरापान नहीं करेगा तो परमात्मा के गुण तुझ में उतार सकता हूँ । गुरु ग्रंथ में नानक ने कहा है कि - भांग, मछली, सुरापान जो प्राणी खाहीं, तीरथ व्रत नेम किये सबे रसातलजाही । मद्य तजी दीजिये यही सद्गुरु ज्ञान है ।

माधव निदान नामक आयुर्वेदिक ग्रन्थ में लिखा है - ये विषयरुप गुणा प्रोक्ता: ते मद्ये प्रतिष्ठिता: । जहर के जो गुण है वे ही गुण मद्य के हैं । आज के वैज्ञानिक तथा मेडिकल की दृष्टि से भी मदिरा पान योग्य नहीं है। मेलबोर्न युनिवर्सिटी ने यह नियम किया है कि मदिरा पान करने से शरीर के प्रत्येक अवयवों को नुक्शान होता है । शरीर में ऐसा कोई अवयव नहीं है जो मदिरापान करने से हानि युक्त नहीं होता ।

"नेशनल इन्स्टीट्युट ओफ फ्रान्स" ने इ.स. १९५५ में ऐसा प्रकाशित किया था कि फ्रांस मे मदिरा पान से रोग ग्रस्त लोग करीब १७००० जितने मरे थे । उसके बाद प्रतिवर्ष इस संख्या में वृद्धि होती गयी ।

डॉ. ओत्सर ने विधान किया है कि "मदिरापान करने से फायदा होता है । इस वात में कोई तथ्य नहीं है । परंतु इससे हानि के सिवाय कोई फायदा नहीं होता । इतना हानि करने वाली मदिरा का पान लोग क्यों करते हैं ? इस पर विचार करने के लिये न्यूयोर्क के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एकत्रित होकर निर्णय किये कि आठ कारणों से व्यक्ति मदिरापान करता है ।

(१) दु:ख भूलाने कि लिये : जब व्यक्ति के जीवन में दु:ख का अतिरेक आता है फिर भी दु:ख दूर नहीं होता बल्कि और अधिक दल-दल में फंसता जाता है । उसके इस शराब की नशा से सारा परिवार परेशान हो जाता है । सामाजिक अप्रतिष्ठा होती है । किसी कविने लिखा है जो खुदा की लीला नहीं जानते, वे ही नशे में जीते हैं । जो गम पीना नहीं जानते, वे ही शराब पीते हैं ।

(२) बेकारी से : मनुष्य पैसा कमाने के लिये, अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिये इधर उधर भटकता रहता है । जब आवश्यकता की उन पैसों से पूर्ति नहीं होती तब वह शराब की गलत लत पर चढजाता है और जिन्दगी बरबाद हो जाती है ।

(३) व्यवसाय के लिये : कितने लोग अपने व्यवसाय के लिये शराब पीने लगते हैं । जैसे ड्राविंग करते हुये ट्रक ड्राईवर पूरी रात वह शराब की नशा में

(अनुसंधान नं. १९८ पर)

श्रावणी पूर्णिमा

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा (महंत माणसा)

पूर्णिमा पूर्णता की प्रतिबिम्ब है। सोलह कलाओं से परिपूर्ण चन्द्रमां की शीतलता से समग्र आकाश खिल उठता है। पृथ्वी के साथ सभी दिशायें चमक उठती हैं। वनस्पतियां भी प्रकाशित हो जाती हैं। पूर्णता प्राप्त करने के लिए असम्भव नहीं अशक्य भी नहीं। कोई तो पूर्णता प्राप्त कर ही लेता है। चारो तरफ पूर्णता फैलाना अति दुर्लभ है। इसीलिये भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि "जो व्यक्ति सभी में से गुण ग्रहण करता है, अवगुण का त्याग करता है वह पूर्णिमा के चन्द्रमां की तरह दिन दूनी रात चौगुनी बढता ही रहता है। साधना के प्रथम सोपान की तरफ गति करने वाले एकदिन अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। फिर भी सोलह कलाओं से खिले हुए कमल की तरह मात्र सरोवर की शोभा बढाना ठीक नहीं, बल्कि पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह चारो दिशाओं में प्रकाश फैलाना ही आदर्श है। महीने- महीने चांद खिलता है और चांदनी फैलती है। लेकिन श्रावण मास की रोशनी भीनाश से भीगी-भीगी लगती है। इसके साथ ही इस महीने में किशोरी बालिकाओं द्वारा गौरीव्रत के निमित्त रिमझिम रिमझिम वरसते वरसात में पूजन की परम्परा देखने में आती है। पीपल के वृक्ष में, भगवान शिव के ऊपर जलाभिषेक की श्रद्धा बढाती, भगवान को नाना विधअलंकारो से अलंकृत झूले पर झुलाया जाता है। आज के दिन ही बहन अपने प्रिय भाई के हाथों में राखी बांधकर उसके दीर्धायु की कामना करती है। पूनम में शिरमौर्य श्रावणी पूनम शीतलता की खान कही जायेगी। तारों से घिरे हुये चन्द्रमा के समान श्रीहरि को हृदय में समा लें। जीवन में सुख का सोपान यहीं से प्रारंभ करने का यही अवसर है।

लेखको की विज्ञप्ति

श्री स्वामिनारायण मासिक के लिए लेखों को भेजते समय लेखों को इतना ध्यान में रखकर लेखों भेजे।

- लेख की कोपी के साथ शब्द कोरा के अनुसार शुद्ध लिखावट में भेंजे।
- संप्रदाय के सिद्धांत तथा मर्यादा अनुसार भेंजे तथा अन्य कोई की उतारा हुआ अथवा कहीं और प्रकाशित लेख को उतारकर न भेंजे। अगर इस प्रकार का कोई लेख छपाना है तो उसकी संपूर्ण जवाबदारी लेखक की रहेगी।
- लेख के अक्षर सुवाक्य होने चाहिए।
- अंग्रेजी या संस्कृत श्लोक शुद्ध तथा चुवाच्य होय उस प्रकार अर्थ के साथ शुद्ध-स्वच्छ होने चाहिए।
- लेख छोटा तथा सूचन होना चाहिए।



म्युझियम मेरे जीवन की अन्तिम वासना है - पूज्य बड़े महाराजश्री

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज-कच्छ)

गुरु पूर्णिमा का माहात्म्य सभी संप्रदाय में बताया गया है । इस प्रसंग पर आचार्य महाराजश्री का वेदोक्तविधिसे पूजन, रविवार ता. २५-७-१० के दिन अहमदाबाद मंदिर के विशाल सभा मंडप में संत-हरिभक्तों द्वारा किया गया था । शुभाशीर्वाद देते समय पूज्य बड़े महाराजश्रीने अत्यन्त जीवनो पयोगी वात बताई, जिसमें उन्होंने कहा कि "आज आप सभी से श्री स्वामिनारायण म्युझियम का उत्सव निर्विघ्न तथा उत्तम ढंग से मनाने का आशीर्वाद मांग रहे हैं।

स्व बाल्यावस्था के अमूल्य प्रसंग को बताते हुये कहा कि हमारे पिताजीने हमें दादा की पहचान कराई थी, उस समय हम ४-५ वर्ष के थे । जब मैं बड़ा होने लगा तब उत्तरोत्तर भगवान के रुप में दादा के अनेकों चमत्कार देखने को मिले । फिर तो मेरी श्रद्धा तथा भक्ति बढती गयी । कई बार ऐसा होता कि स्कूल का होमवर्क नहीं हो पाता तब मैं दादा से प्रार्थना करता कि शिक्षक प्रश्न नहीं पूछे, ऐसा ही होता । इसी तरह जब बरसात होती मेरा मन स्कूल जाने को न हो तो दादा से प्रार्थना करता तब माताजी सामने से कहती कि आज बरसात बहुत हो रही है स्कूल मत जाना । इस तरह कईबार बाल्यावस्था में चमत्कार देखने को मिला जिससे भावना दृढ होती गयी ।

एक समय पिताजी के पास हस्तरेखा विशेषज्ञ आये उनसे पिताजीने कहा "इन लालजी का आप हाथ देखिये। ज्योतिषी मेरा हाथ देखकर कहा "लालजी की शादी अमेरिका में होगी वहीं पर पढेंगे । संयोग वश उच्च शिक्षण के लिये अमेरिका की युनिवर्सिटी से आदेश मिल गया । परंतु ज्योतिषी के कथन पर विश्वास पिताजी को नहीं हुआ, अतः विदेश पढने की संमति नहीं दिये । जोतिषीने यह भी बताया कि इन्हे सन्तान नहीं होगी, होगी भी तो वृद्धावस्था में होगी । पूज्य आचार्य महाराजश्री की तरफ इशारा करते हुये कहे कि आप सभी प्रत्यक्ष देख सकते हैं । म्युझियम की वात करते हुये जेतलपुर की गंगाबा से मंदिर निर्माण के लिये महाराज ने कुछ पैसे मांगे, वह वर्जनल पत्र हमारे पास परम्परागत आज भी

विद्यमान है। वह पत्र म्युझियम में हमने रखा है। इस तरह महाराज की उपयोग में आई बहुत सारी वस्तुयें हमें वंश परम्परा में प्राप्त है। सभी वस्तुयें हम म्युझियम में रखेंगे।

बड़े महाराजश्रीने कहा कि उत्सव मनाने का कार्यभार समिति के ऊपर होता है, समिति यदि उत्तम विचार की होगी तो कार्य सुन्दर ढंग से पंपन्न हो सकता है। इस समय समिति में प्रायः सभी अच्छे लोग हैं। परंतु द्विशताब्दी के समय समिति के सदस्यों ने बताया कि "द्विशताब्दी मनाने में इतने खर्च की क्या आवश्यकता ? इतना खर्च करना क्या योग्य है ? अन्त में मैने भगवान श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना करके उत्सव का सम्पूर्ण भार अपने मस्तक पर लेलिया, बाद में समिति के सभी सदस्य उत्सव मनाने में सहयोग किये और अच्छी तरह उत्सव सम्पन्न हुआ।

इसी संदर्भ में एक दृष्टांत पढने में आया है। एक भूदेव किसी जंगल में भटक गये और सिंह के निवास स्थान पर पहुंच गये। सिंह की समिति में सलाहकार - मैना, तोता, हंस इत्यादि थे। वे सभी सिंह से ब्राह्मण देवता को सोना, चांदी, माणिक इत्यादि देने को कहा, सिंहने वैसा ही किया। भूदेव उन सभी पदार्थो को लेकर वहाँ से होलिये। लेकिन ब्राह्मण स्वभाव होने से लालच जगी, वे पुनः उस सिंह की गुफा के पास गये, संयोगवश उस समय सभासद सभी बदल गये थे। समिति में सलाहकार श्रृंगाल भालू, चिता इत्यादि थे। इन सभी ने सिंह को सलाह दिया कि ब्राह्मण को जाने नहीं देना है। परंतु सिंह बहुत समझदार था, उसने ब्राह्मण से कहा आप यहाँ से चले जाइये। इस दृष्टांत में बहुत रहस्य छिपा हुआ है।

पूज्य लालजी महाराज दादाजी की बात बड़ी तन्मयता से सुन रहे थे। पूज्य आचार्य महाराजश्री पिताजी के प्रवचन को सुनकर मुग्धहो गये थे। हजारो संत, हरिभक्त, यजमान परिवार तथा विदेश से आये हुये हरिभक्त, बड़े महाराजश्री के इस रहस्यात्मक तथा आध्यात्मिक विचारों को सुनकर तथा श्री नरनारायणदेव के चरणों में अडिग श्रद्धा एवं निष्ठा को देखकर तालियों की नाद से आकाश गूंज उठा था। सभा स्तब्धहो गयी थी।

अपने आगामी उत्सव

भादो कृष्णपक्ष-१२ ता. ९-९-२०१० रविवार को जलझीरणी एकादशी श्री गणपतिजी की यात्रा अहमदाबाद, मूली, जेतलपुर, गढपुर, वडताल, भुज।

आसो कृष्णपक्ष-२ ता. ९-१०-२०१० शनिवार को बद्रिनाथधाम मंदिर का पाटोत्सव।

आसो कृष्णपक्ष-१० विजया दशमी-दशहरा ता. १७-१०-२०१० रविवार को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्राकट्योत्सव ईडर में मनाया जायेगा।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.com
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com

संप्रदाय का गौरव

मूली श्री राधाकृष्णदेव के सरला (ता. मूली) गाँव की श्री सी.आर. गार्डी विद्या मंदिर में आचार्यश्री रमेशभाई पटेल की गुजरात राज्य के श्रेष्ठ आचार्य पारितोषक एवोर्ड के लिए पसंदगी हुई है। उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शुभेच्छा भी दी है।

श्रीहरि के अपर स्वरुप तो अंतर्यामी ही होंगे

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी श्रीहरि द्वारा स्थापित की हुई धर्मवंशी आचार्य परंपरा के आचार्यश्री को अपने शास्त्रो में स्वयं श्रीहरिने अपने अपर स्वरुप समान कहा है। श्रीहरि के अपर स्वरुप समान इस धर्मवंशी आचार्यश्री की ना जाने कितने ही सत्संगीजनो को तथा अन्य धार्मिक जनो को आश्चर्यकारी तथा अविस्मरणीय अनुभूति भूतकाल में हुई है तथा वर्तमान में भी होती रहेंगी। परंतु उसमें से एक प्रसंग तो बताये बिना तो रहा ही नही जाता। प्रसंग प.पू. बड़े महाराजश्री जब गद्दी पर थे तब का है। जिसे इस प्रसंग की अनुभूति हुई वे अहमदाबाद के सरसपुर विस्तार के रहीश है। तथा उनका संप्रदाय वैष्णव है। उनका नाम किरीटभाई भलाभाई भावसार तथा व्यवसाय फोटोग्राफर का था। उन्होंने उनके समक्ष हुई समग्र घटना की अनुभूति का वर्णन मेरे समक्ष किया। मैंने उनको कहा कि आपकी यह अनुभूति हमारे श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रकाशित हो तो आप को कोई अवरोधतो नहीं है ? तब उन्होंने कहा यदि आपके मासिक में यह प्रसंग प्रकाशित होगा तो मुझे बहुत ही आनंद होगा।

अब इस प्रसंग का वर्णन उनके ही शब्दों में करते हैं। उन्होंने कहा, फोटोग्राफर के कारण मुझे कईबार आपके (संप्रदाय के) प्रसंग का लाभ मिल जाता है। कई वर्ष पहले की बात है। निकोल गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर की प्रतिष्ठा की सभा में प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री बिराजमान थे। मैं उनसे १०-१२ फिट दूर से उनकी तसवीर खींच रहा था। मैंने देखा कि मैं जब-जब उनकी तसवीर खींचने के लिए उनके पास जाता था तो उनके चहरे पर नापसंदगी का एहसास होता था। भाव बदल जाते थे। मुझे ऐसा लगा कि सायद मुझे कोई व्यसन तो नहीं है। परंतु आज ही मैंने शरदी-कफ के कारण प्याज-लहसुन खाया था। उसकी दुर्गंधतो महाराजश्री को नहीं आ रही है न ? सभा में बैठा और विचार करने लगा कि हमारे संप्रदाय में भी तो प्याज-लहसुन खाने की मंजुरी नहीं है। मुझे भी प्याज-लहसुन खाने की आदत तो है नहीं। परंतु मुझे शरदी-कफ के कारण नित्य प्याज-लहसुन खाना पड़ता है। मैंने सभा में बैठे-बैठे मनोमन प्रार्थना किया कि हे महाराजश्री। मुझे आशीर्वाद दीजिए की बिना प्याज-लहसुन खाये मेरी सर्दी ठीक हो जाय। जो मेरी शरदी ठीक हो जायेगी तो मुझे प्याज-लहसुन खाने की तो जरुरत ही नही पड़ेगी।

सभा के अंत में प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वचन देना शुरु किया। अंतर्यामी रुप से जैसे मेरा संकल्प जान चुके हो वैसे उन्होंने आशीर्वचन की शुरुआत की, कई लोगो को ऐसा लगता है कि प्याज-लहसुन खाने से शरदी कन्ट्रोल में रहती है तो हकीकत में ऐसा नही है. उसके लिए एक अच्छा प्रयोग है ? आप भोजन करके उठो तो तुरंत ही अधिक पानी नहीं पीना चाहिए मात्र मुख की शुद्धि के लिए मात्र एकाद-दो घूंट पानी पीकर आधे घंटे के बाद पानी पीना चाहिए। यह बात सुनकर मुझे अति आश्चर्य हुआ और मुझे ऐसा लगा कि महाराजश्रीने मात्र मेरे हित के लिए ही यह बात कही है। उसी दिन से मैंने प्याज-लहसुन छोड़ दिया। आज ६४ वर्ष की मेरी उम्र हो गई है। परंतु मुझे आज तक शरदी नहीं हुई नही मुझे शरदी-कफ की कोई दवा खानी पड़ी।

श्रीहरि कहते है कि, "धर्मवंशी आचार्य ज माय रे, सदा रह्यो छुं मारी ईच्छाये ॥" प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा कहा हुआ यह प्रयोग सब की जिंदगी में उपयोगी है या नही परंतु कीरीटभाई को अत्यंत उपयोगी रहा। अन्यजन यह लेख पढ़कर इसका प्रयोग करे तो उसमे कुछ गलत नहीं है। श्रीजी महाराज के एकांतिक भक्त तो शरदी-कफ की तकलीफ में कभी भी प्याज-लहसुन जैसी अभक्ष्य वस्तुओं का आहार करते ही नहीं।

चेरीहील न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में महिलाओं का सत्संग शिबिर



तीन अगस्त मंगलवार की प्रातः काल के दिव्य वातावरण में श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरीहील में अमेरिका आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों से तथा देश विदेश से आई हुई महिलाओं का सत्संग शिबिर प.पू. बड़ी गादीवालाजी की शुभ उपस्थिति में संपन्न हुआ।

''सुखनी सीमा रे चेरीहीलनी शिबिर माणे''

इस भौतिक वादी देश में किसी को किसी के साथ वात करने का भी समय नहीं है, फिर भी चेरीहील के शिबिर में दिव्य आनंद का अनुभव हो रहा था। सभी शिबिरार्थियों को मोक्ष की चाहना थी। यहाँ पर किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता। यहाँ पर जो भी आया वह त्रिविधउपाधियों से रहित देखा गया। इस संसार में महिलायें किस तरह अपना जीवन चलाये, उनका जीवन कैसा होना चाहिये इस विषय पर पूज्या बड़ी गादीवालाजीने बहुत ही सरल ढंग से व्याख्यान दिया। व्यवहार तथा परमार्थ के दानो मार्ग को बताकर सभी को परमार्थ के मार्ग में लगा दी। सारा हाल श्री स्वामिनारायण महामंत्र से गूंज उठा। स.गु. मुक्तानंद स्वामी ने अपने कीर्तन में गया है कि -

सर्वे घरनो ते धंधो विसरी।
हरिने मळवा आतुर थई सुंदरी रे।
धन्य धन्य छे आज नी घड़ी रे।

आज का कैसा समय कि महिलाये अपने घर का सभी काम काज छोड़कर बहनो के मंदिर में पूज्या बड़ी गादीवालाजी की अमृतवाणी सुनने के लिये आतुर होकर दौड़ पड़ी। प.पू. बड़ी गादीवालाजी के पधारते ही बहनें स्वामिनारायण की नाद से स्वागत की। जिसके दर्शन होते ही जीवन धन्य हो जाता है। जिसके मुख कमल के दर्शन मात्र से सभी प्रकार की थकावट दूर हो जाती है। गादीवालाजी के आगमन से आनंद की लहर चारो तरफ फैल गयी।

जेने जाईये ते आवो मोक्ष मांगवा रे लोल।
आज धर्मवंशी ने द्वार नरनारी... जेने .. ॥

आरती तथा दर्शन की विधिपूर्ण होते ही पूज्या बड़ी गादीवालाजी की अमृतमयी वाणी सुनने के लिये सभी बहने मंत्र मुग्धहो गयी थी। सदाचार ही सच्चा धर्म है, इसका रहस्य समझाई थी।

इस शिबिर में सत्संग के पांच महत्व के अंगो को

समझाते हुये कहीं कि धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा महिमा के साथ भक्ति करना जीवन में हितावह है। इसके साथ ही जन मंगल नामावलि का अर्थ - भावार्थ - रहस्य समझाई थी। बहनो को यह अर्थघटन प्रथम बार ही सुनने को मिला था। बहनो को यह भी समझाई कि सहन शीलता, धैर्य तथा समझदारी की भावना रखने से घर में क्लेश नहीं होता। इससे भगवान में भक्ति बढती है। भगवान भी अपने ऊपर कृपा दृष्टि बरसाते है।

आषाढ वद-१० ता. ५-८-१० गुरुवार को भावि आचार्य प.पू. लालजी महराजश्री के जन्मोत्सव को पू. गादीवालाजी की उपस्थिति में श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार तथा अन्य महिलाओं की उपस्थिति में मनाया गया था।

दोनों कुमारों ने ट्विंकिल-ट्विंकिल लिटिल स्टार लालजी महाराज नो जय जयकार १, २, ३, ४ लालजी महाराजश्री का जयजयकार किया। आज का दिन कैसा है, सोना से भी महंगा है। इस तरह सुंदर गीत गाकर बर्थडे केक काटकर तथा सभी को गुलाब जामुन का प्रसाद खिलाकर तृप्त कर दिया। सभी बहने आनंद में आकर नृत्य करने लगी। आनंद का वातावरण फैल गया।

इस समग्र शिबिर में आयोजकों की सेवा सराहनीय थी। प्रातः से लेकर पूर्णता पर्यन्त सतत प्रवृत्ति चलती रही। प्रातः योग क्रिया से प्रारंभ करके रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था। बहनों ने प्रातः से लेकर सायं तक नास्ता भोजन चाय, कोफी की इतनी सुंदर व्यवस्था की थी कि सब कुछ सभी भूल चुके थे।

शिबिर में आयी हुई आश्रित बहनों को संप्रदाय की नीति-नियम समझायी थी। इसके साथ ही श्री नरनारायणदेव की महिमा, श्री धर्मकुल की महिमा, धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा, बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवाला की महिमा को बड़ी सरल भाषा में समझायी थी। इसके अलांवा शरीर स्वास्थ्य के लिये डायेटीशयन द्वारा पौष्टिक आहार, डेन्टीस द्वारा दांतो की रक्षा, डायाबीटीस तथा केन्सर जैसे असाध्य रोगों के लिये कैसे सावधानी रखनी चाहिये इसका भी मार्गदर्शन दिया गया था। स्वास्थ्य अच्छा होगा तो अधिक भजन होगी। बहनो में साड़ी स्पर्धा, जिस में भारतीय आदर्श का दर्शन हो रहा था। इस में संप्रदाय की मर्यादा का भी दर्शन हो रहा था। गोमुखी बनाने को भी बहने सीखी थी। श्रीहरि की मूरति तथा चरणारविंद १६ चिन्हों के साथ बनाने में बालकों ने भी भाग लिया था। इसके अलांवा भरत नाट्यम्, संगीत, ड्रामा तथा भजन-कीर्तन इत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी बहनों ने भाग लिया था।

यहां पर अपने देश में भोजनालय में जो भोजन बनता है उससे भी उत्तम भोजन बनाकर बहनों ने भगवान का भोग लगाकर सभी को प्रसाद रुप में भोजन कराई थी।

कितनी स्त्री-पुरुष जो प्रतिदिन नौकरी करते है वे अपनी नौकरी छोड़कर खड़ेपैर यहाँ पर सेवा कार्य किये थे। और धन्यता का अनुभव भी किये थे।

अपने आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टरो से शिबिर के लिये विविधप्रकार की सेवा करने हेतु हरि भक्त पधारे हुये थे। यु.के. तथा केनेडा से कुल २५ जितनी बहने शिबिर का लाभ ली थी। सतत ५ दिन तक पूज्या बड़ी गादीवाला ने जो सत्संग का सुख दिया वह तीनों लोक में कही सुलभ नहीं है। बहनो को हार्दिक आशीर्वाद देते हुये संतोष का अनुभव नहीं कर पा रही थी। वहाँ से जाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। सभी के मन में बस यही हो रहा था कि यह अवसर कभी खत्म नहो, ऐसा का ऐसा ही बना रहे। सभी बहनोने शिबिर की सार्थकता को समझा और इसी तरह बार-बार होता रहे ऐसी सभी की चाहना भी है।

सत्संग बालपोथिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

घर में रहना सीखो

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

आदमी जब चारों तरफ से घूमकर अपने घर आता है तब उसे शांति, आनन्द का अनुभव होता है । "सानन्दं सदनम्" जिस घर में बाहर से आने के बाद आनंद का अनुभव हो, बाहर से उद्विग्न-चिन्तित, थके हुये आने के बाद घर का वातावरण आनन्द पूर्ण होना चाहिये । घर में सभी परिवार के सदस्य एक साथ भोजन करें । दो समय संभव न हो तो एक बार अवश्य भोजन सभी साथ बैठकर करें । इससे घर में एकता, सद्भाव, आत्मीयता का भाव बढता है । परिवार में रहने वालों को घर में कैसे रहना चाहिये इसकी नियमावली किसी बुजुर्ग ने नहीं बनाई । कारण यह कि परिवार में स्नेह-आत्मीय भाव की वात होती है । परिवार में अपना व्यक्तिगत कोई दृष्टिबिंदु नहीं होता बल्कि आत्मीय दृष्टि विन्दु होता है । सोने के प्याले को छोटा सा पत्थर भी तोड़ देता है । सोने जैसे आत्मीय संबन्धवाले परिवार को हल्के पत्थर जैसे तुच्छ स्वार्थ, आवेश भरा शब्द तथा उतावलिया वर्तन रफादफा कर देता है ।

घर में जब एकता होती है तो भगवान का वास होता है । जहाँ एकता न हो वहाँ भगवान एकमिनिट भी खड़े नहीं होते । मूलजी ब्रह्मचारी के मछियाव गाँव में भगवान स्वामिनारायण पांचसौ परमहंसो के साथ सुरसिंहजी के घर पधारे । उनके घर में सास-पुत्रबधु में मतभेद चल रहा था । आगे झगड़ा का रुप लेलिया और ससुराल वाले उसके मायके भेंज दिये । विशाल मैदान में संत रसोई बनाने लगा । उस समय स्वामिनारायण भगवानने सास को समझाने का बहुत प्रयत्न किया । सासने कहा प्रभु ! हम आपकी सभी वात मानेंगी लेकिन वह बहू मेरे घर में नहीं चाहिये । तब भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि "आप हमें क्या समझती हैं ? महाराज आप भगवान है यह सत्य है, लेकिन आप की यह वात हम नहीं मानेंगी । भगवानने सभी संतो से कहा बना हुआ भोजन छोड़कर हम चलते हैं, ऐसा कह कर, वहाँ से चल दिये । परंतु उस महिला में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । भगवान को जाने दिया लेकिन मन की गांठ को बनाये रखी ।

आज भी घर में सास-बहु के बीच में मत भेद देखने को मिलता है, ऐसी स्थिति में सिंहासन पर विराजमान महाराज को भोग लगाने के लिये रोटी-शाग रखें तो क्या महाराज उस प्रसाद को ग्रहण करेंगे ? कभी भी नहीं ग्रहण करेंगे । कितने लोगो का घर ऐसा होता है कि घर में आते ही उद्वेग होने लगता है । प्रतिदिन महाभारत होता है । वारंवार घर में किसी भी कार्य करने से पहले दलील की जाती है । स्पष्टीकरण किसी भी कार्य में घर की स्थिरता को नष्ट कर देती है । शांति घर की नष्ट हो जाती है । आनदं से भरा वातावरण किस से संभव है ? दीवाल से ? कलर से ? पत्थर से ? कीमती फर्निचर से ? या घर के सभी सदस्यों से ? इस विषय में किसी भी एक को दोषी नही बनाया जा सका ।

मित्रो अच्छा घर बनाना संभव है । लेकिन उस घर में सफलता पूर्ण रहने के लिये सदा सावधान रहने की जरुरत है । लोकप्रिय बनने से पहले परिवार प्रिय होना आवश्यक है । अपने मुक्तानदं स्वामीने प्रभु की आरती में कुटुम्ब की भावना को एक में गूंथ दिया है ।

पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे ।
काल कर्म थी छूटी कुटुंब सहित तरशे ॥

सुखी घर तो सद्भाव से ही बनता है । जिस घर में सदा एकता, सद्भाव, सत्संग होता रहता है उस परिवार में करुणनिधिभगवान श्री स्वामिनारायण की करुणा,

कृपा अखंड बनी रहती है। ऐसे कुटुंब का मोक्ष मार्ग भी सरल हो जाता है। मुक्तानंद स्वामीने लिखा है-

"आ अवसर करुणानिधिकरुणा बहु कीधी।
मुक्तानंद कहे मुक्ति सुगम करी सीधी ॥

●

भगवान भक्त के भाव के वश में होते हैं

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भक्तवत्सल भगवान भक्तों की भावना को पूर्ण करने के लिये गाँव-गाँव में विचरण करते हैं। भगवान के प्रगट होने का यही कारण है। भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने के लिये पधारते है। यह कार्य अपने धाममें रहकर पूर्ण कर सकते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष भक्तो के मनोरथ पूर्ण करने के लिये धरा पर आते हैं?

स्वामिनारायण भगवान भाल विस्तार में विचरण कर रहे थे, उस समय उनके साथ प्रभु में समर्पित भक्त भी थे। जिसमें सुराभक्त, सोमलाभक्त, उकाभक्त, जीवा भक्त थे। श्रीजी महाराज की ईच्छा में इन सभी का जीवन था। घर तथा खेती या अन्य व्यावहारिक कार्य छोड़कर श्रीहरि के साथ रहते थे। श्रीजी महाराज तथा हरिभक्त घूमते हुये पूंजा भाई के घर पधारे। पूंजाभाई की पत्नी अंजुबहन बहुत धार्मिक थी। गृहिणी धर्म का नियम अच्छी तरह पालन करती थी। अंजु बहन महाराज भक्तों के साथ आये हैं यह सुनते ही आनदं में आकर सभी की सेवा में स्वयं लग गयी। सभी के भोजन की व्यवस्था की और स्वयं महाराज के नाना विधव्यंजन तैयार की। जहाँ भाव होता है वही पर भगवान पधारते हैं। मंजुबहन इतना भाव विभोर हो गयी कि भोजन में नमक की जगह चीनी डाल दी। प्रभु भी भाव के भूखे हैं वे भी बड़े प्रेम से पूरा भोजन कर गये। महाराज के मन में एक भाव अवश्य था कि हमारी अलग व्यवस्था तथा भक्तों की अलग व्यवस्था यह ठीक नहीं। फिर भी महाराज प्रसंशा करते हुये उस भोजन को किये।

सामने सुराखाचर बैठे थे, उनके मन में हुआ कि महाराज अवश्य कोई अच्छी चीज खा रहे होंगे। इसलिये अनजान कीतरह प्रश्न किये, प्रभु ? यह लंबा-लंबा क्या खा रहे हैं ? नमक की जगह पर शक्कर होती तो प्रभु प्रसाद के रुप में अवश्य देते। ऐसा प्रभु का स्वभाव है।

जणस स्वादु रे, जणाय जमतां जमतां,
पासे हरिजन रे, बैठा होय मन गमतां,
तेमने आयी रे, पछी पोते जमे ॥

स्वयं भोजन करते हो, उस समय उनके बगल में भक्त बैठे रहते थे। भक्तों को प्रसाद देकर ही भोजन करते थे। लेकिन प्रभु आज बिना प्रसाद दिये अकेले ही भोजन कर रहे हैं। सुराखाचर से प्रभु ने कहा सुरा बापू यह आप नहीं खा सकते ? अंजु बाने कहा, महाराज तो और शक्कर लाकर दूँ. नहीं इतनी बहुत है। प्रभु भोजन करके खड़े हो गये। अब वह बहन प्रसाद के रुप में थाली का भोजन ज्यों ली कि तुरंत उसे ख्याल आया कि प्रभु को शक्कर की जगह पर नमक डाल कर खिलाई हूँ। उन्हें बहुत पश्चाताप होता है। वे प्रभु के पास जाकर मांफी मांगती हैं। प्रभु ने कहा, अब आप सौ वार भोजन बनाकर खिलायेगी तो भी इतना स्वाद नहीं आयेगा। वह प्रेम का स्वाद था।

प्रेम का रसास्वाद लेने के लिये प्रभु धरती पर पधारते हैं। इसीलिये शबरी का बेर खाने के लिये उसके पास चले गये। सुदामा का चिउड़ा खाने के लिये उतावल हो गये। इसीलिये विदुरजी की पत्नी के हाथों पेट भर कर शाग खाये थे। जीवण भक्त के मठ की रोटी खाकर प्रसंशा किये थे जिनके भीतर भाव था उनके यहाँ भोजन किये और उसके मनोरथ पूर्ण किये।

इसलिये भगवान को बुलाने के लिये भाव की आवश्यकता होती है। वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि "श्रद्धा से युक्त तथा ईर्ष्या से रहित होकर भक्ति करने से भगवान वश में होते हैं।

भक्तिसुधा

जेतलपुरमें बहनों की सभा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी का आशीर्वचन-मनुष्य देह की महत्ता

- सां.यो. नर्मदाबा (जेतलपुर-हवेली)

आप सभी बड़े भाग्य शाली है। संसार की सभी सुख सुविधा प्रभु की कृपा से सभी को मिली है। संसार क्षण भंगुर है। कल क्या होगा किसे पता है। बाहर भटकने की कोई आवश्यकता नहीं परमात्मा अपने अन्दर है।

एक भिखारी जहाँ बैठा था उसी के नीचे सोना था, लेकिन उसे क्या पता। संयोगवश एक संत वहाँ से जा रहे थे उनकी दृष्टि उस भिखारी पर पड़ी उन्होंने कहा तूं क्यों भीख मांगता है, जहाँ बैठा है उसी के नीचे सोने का घड़ा है। वह खोदा तो सोने का घड़ा निकला, अब वह सुखी हो गया। इसी तरह परमात्मा की पहचान संतो को होती है सामान्य व्यक्ति को संभव नहीं। जगत की माया कपूर जैसी है तथा भगवान की मूर्ति आरती की तरह हैं। माया क्षणभंगुर है, सत्य नहीं है। ज़ब दुःख आता है तभी सुख का महत्व समझ में आता है। एक गरीब था, उसे दान देने के लिये कोई शेठ लड्डू देने गया। वहीं पर एक भिखारिन भी थी उसने भी मांगा। शेठ ने उसे तीन लड्डू दिया। भिखारीन दौड़ती शेठ से कही शेठ एक वापस ले लीजिये क्योंकि एक बेटा छ महीना का है, वह खायेगा नहीं। शेठ ने कहा रखलो शाम को काम आयेगा। भिखारीन ने कहा शाम या सुबह किसने देखा। जो सुबह दिया वह शाम को भी देगा।

इस उदाहरण से यह लगता है कि यदि भगवान में श्रद्धा हो तो अवश्य सभी कार्य प्रभु पूरा करते हैं। जिस घर में संस्कार होता है वहाँ स्त्री के कारण होता है। घर को स्वर्ग बनाने का काम स्त्री का है। एक दो घर ही ऐसे होंगे जहाँ पर शादी के बाद भाई एक साथ प्रेम से रहते हों, प्राय: बिगाड़ हो जाता है, यहाँ तक कि एक दूसरे को लोग देखते भी नहीं।

एक पिता पुत्र एवं पुत्र वधू के साथ रहता था। लेकिन पिता के साथ पुत्र वधू रहना नहीं चाहती थी। क्योंकि वह वृद्ध थे जिस का हाथ कांपता था, जब भोजन करने बैठे तो रोज एक न एक वर्तन तोड़ देते थे। इसलिये बहू नाराज होकर उनके लिये लकड़ी का वर्तन ले आई, उसी में भोजन पानी इत्यादि देती थी। एक समय उस बहू का लड़का डन्डे से खेल रहा था। उसकी मां ने पूछा कि तूं यह क्या कर रहा है तब बालक ने कहा मैं बर्तन बना रहा हूँ जब आप वृद्ध होंगी तो यही काम में आयेगा। इसका मतलब आप सभी समझगये होंगे। स्त्री ही बच्चे को सही दिशा दे सकती है।

अंत में पूज्या गीदावालाने कहा कि जेतलपुर के भक्त बड़े भाग्यशाली हैं। पूनम के दिन इतनी भीड़ होती है कि प्रभु के दर्शन की झांकी मात्र किसी को मिल पाती है जब कि आप सभी घंटो बैठकर भजन करते हैं। आप लोगों को सत्संग कराने के लिये त्यागी बहने भी मिली है। आप सभी प्रतिदिन मंदिर में अवश्य आईये इससे आपका ही जीवन सुखी नहीं होगा बल्कि आपके सहयोग से अन्य का जीवन भी सुखी होगा। पारिवारिक जीवन भी सुदृढ़ होगा। आप सभी सुखी हों, आप सभी उत्तरोत्तर बढ़ते रहें ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

●

हमारे डी नरनारायणदेव

- प्रिया पटेल (लंडन)

भरतखंड तो देवों की तथा ऋषिमुनिओं की तथा साधु संतो की पवित्र जन्मभूमि है। भरतखंड में मनुष्य के रुप में जन्म लेने के लिए १०० जन्मो तक पुण्य करने पड़ते हैं। इन्द्रादि देवता भी ऐसा चाहते है कि वे इस पुण्यशाली भूमि पर जन्म ले और मोक्ष प्राप्त करें।

इस भरतखंड के आंधेष्ठाता उसका राजा कौन है ? वो है हमारे अपने श्री नरनारायणदेव ! कई लोगो को उसकी

जानकारी नहीं है कि श्री नरनारायणदेव का प्रादुर्भाव कैसे हुआ । जब इस सृष्टि में श्री पुरुषोत्तम नारायण (श्रीजी महाराज) के सिवाय कोई का असतित्व न था उस समय महाराजने सृष्टि सर्जन करने का निश्चय किया। वैश्विक उत्क्रांति के समय महाराजने अक्षर पुरुष की तरफ दृष्टि की तथा उसके परिणाम स्वरुप अक्षर पुरुष के हृदय कमल में से श्री धर्मदेव तथा ब्रह्मविद्या उत्पन्न हुआ। श्रीजी महाराजने श्री धर्मदेव को तथा उनकी धर्मपत्नी को अनंत विश्व में रहने की आज्ञा की जिससे कोई भी धर्म का आचरण करे तो उसे अनंत सुख प्राप्त हो। श्री धर्मदेव प्रभु के पास रहना चाहते थे।

श्रीजी महाराज ने कहा आप दोनो जहाँ रहेंगे वहीं पर हम भी रहेंगे । अभी आप अपने विष्णुपुर में विचरण कीजिये बाद में मैं आपके यहाँ पुत्र के रुप में अवतार लूंगा।

इस तरह काफी समय बीत गया और धर्मदेव प्रभु के दर्शन के लिये व्याकुल हो गये । दोनो पति-पत्नी पृथ्वी पर आये और साबरमती नदी के तट पर तप करने लगे। कठोर तप करते हुये वर्षो वीत गये एक दिन धर्मदेव के हृदय में श्रीहरि का दिव्य दर्शन हुआ, चारो तरफ प्रकाश फैल गया। उस समय सभी देवी-देवता आ गये। सभी को यह ज्ञान हो गया कि प्रभु का इस पृथ्वी पर अवतरण हो गया है। श्रीहरि चार स्वरुप धारण किये - हरि, कृष्ण, नर तथा नारायण . इसके बाद इन चारो स्वरुपों का आकाश मार्ग से पुण्य वृष्टि करके देवताओं ने स्वागत किया। सभी दिव्यात्माओं ने दर्शन का सुख प्राप्त किया। नर ने सभी से कहा आप सभी लोग हरी तथा कृष्ण का ही पूजन करें हम दोनो (नर-नारायण) ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए तप करेंगे । नर नारायण ऐसा कहकर बद्रिकाश्रम में तप करने के लिये चल पड़े। दोनो पृथ्वी पर से राक्षसों का नाश करने के लिये अनेको अवतार धारण किये।

कलियुग में दुर्वासा के श्राप से नरनारायणदेव द्वारा भगवान स्वामिनारायण को अवतार हुआ। वचनामृत के कई प्रकरणों में इसकी चर्चा हुई है।

"मने ध्यान थी सांभळो, हुं जे छे एक हुं छुं, ईश्वर नी भक्ति थी विशेष कशु ज नथी। कारण के ईश्वर ज सर्वेनो कर्ता छे। अने ईश्वरनी कृपा थी हुं मारी इच्छानुसार कंई पण करी शकुं छुं कारण के हुं नरनारायण ऋषि छुं। (वचनामृत)

इस पृथ्वी पर श्री नरनारायणदेव अवतरित होकर आज भी भक्तों के कल्याणार्थ तप कर रहे हैं।

वारंवार मैं श्री नरनारायणदेव के महत्व की चर्चा करता हूँ वह इस लिये श्री कृष्ण भगवान मेरे स्वरुप में विराजमान है। कई बार लोग देश विभाग की वात करते हैं। यहाँ पर मैं अपनी बुद्धि के अनुसार लिख रही हूँ।

प्रश्न-१. अपनी नित्य पूजा में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति क्यों रखनी चाहिये ?

उत्तर-१. वचनामृत में सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने कहा है कि अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा हमने अपनी बांहो में भरकर की है , हमारे में तथा उनमें कोई फर्क नहीं है। वहीं पर यह भी आज्ञा किये है कि सभी मेरे भक्त श्री नरनारायण की मूर्ति को पूजा में अवश्य रखें . वह आज्ञा वडताल तथा अहमदाबाद दोनो देश के भक्तों को की।

श्री नरनारायण के रुप में श्री स्वामिनारायण भगवान आज भी सत्संग में विराजमान है। इसीलिये आज पूरा सत्संग समाज फलाफूला दिखाई देता है।

प्रश्न-२. श्री नरनारायण के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

उत्तर-२. श्रीजी महाराजने कहा है कि हम सभी श्री नरनारायणदेव के सेवक है। महाराज ने यह भी कहा है कि श्री नरनारायणदेव हमें जैसे रखें उसी में सन्तुष्ट रहना चाहिये। खराब स्थिति आवे या अच्छी स्थिति आवे दोनों में भगवान के ऊपर अपना सर्वस्व समर्पित कर देना चाहिये। प्रभु की पूजा तन, मन, धन से, समर्पित भाव से करनी चाहिये।

प्रश्न-३. श्री नरनारायणदेव दो स्वरुप में क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर-३. इस की चर्चा भक्त चिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामीने किया है कि "छो तो एक ने दिसो छो दोय" आप भले एक हैं फिर भी दो रुप में दर्शन देते हैं। बहुत कम लोग इस भेद को समझपाते हैं। इस पृथ्वी पर श्री नरनारायणदेव अनेकों वार अवतार लिये हैं। नर अर्थात् अर्जुन। भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के रुप में अवतरित हुये। श्री कृष्ण भगवान के निजधाम गमन के बाद नारायण भगवान भी अर्जुन का देह छोड़कर एक सामान्य मनुष्य हो गये।

प्रश्न-४. श्री नरनारायणदेव भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान को क्यों अति प्रिय हैं?

उत्तर-१. श्री नरनारायणदेव सभी अवतारों में एक है। इसके साथ ही श्री हरि का हृदय तथा श्री नरनारायण का हृदय एक है। इसीलिये अहमदाबाद में प्रथम मंदिर निर्माण कराकर श्री नरनारायण को प्रतिष्ठित किये। दोनो में कोई भेद नहीं है। जो व्यक्ति बद्रिकाश्रम तक नहीं पहुंच सकते उन्हें उन्हीं स्वरुपों का दर्शन यहाँ पर हो जाता है।

प्रश्न-५. हम श्री नरनारायणदेव को क्या अर्पण कर सकते हैं?

उत्तर-१. श्री नरनारायणदेव की मूर्ति देदीप्यमान है। अहंकार, क्रोधसे रहित है, इसीलिये उनके आश्रितों को क्रोध-अहंकार से रहित रहना चाहिये। उन्हीं को प्रसन्न करके उन्हीं के सानिध्य में रहना चाहिये।

पेज नं. ८ से आगे

मद्यकुं पीवत नहि बड भाग्य

ट्रक चलाता रहता है। इसी तरह रात पाली में काम करने वाले नौकर, क्लब चलाने वाले लोग, इस तरह के प्राय: सभी लोग ज्ञान-अज्ञात में शराब की गलत लत पकड़ लेते हैं।

(४) दवा के रुप में : देवमारी के समय शराब युक्त दवाओं का सेवन भी खराब असर करता है। कितने लोग ढन्ठी से बचने के लिये भी शराब पीते हैं। इन सभी कारणों में ध्यान दिया जाय तो यही होगा कि जब शराब पीते हैं तब रक्त संचार तेज हो जाता है और हृदय की गति भी तेज हो जाती है, इससे शरीर में गर्मी की प्रतीति अवश्य होती है लेकिन बहुत हानिकारक है, अटैक आने की पूर्ण संभावना रहती है।

(५) संग दोष : कई बार खराब मित्रों के सहकार में गलत लत लग जाती है जिससे शराब पीने लगता है।

(६) कुटुम्ब का संस्कार : किसी परिवार में पति पत्नी दोनो शराब पीते हो, उनका देखकर बालक के ऊपर उसकी असर होती है, जिससे शराब की एक परंपरा बन जाती है।

(७) मनोरंजन के लिये : कितने ऐसे अमीर लोग होते है जो पार्टियों में अथवा अपने घर की पार्टी में या कल्बों में जाकर मनोरंजन के लिये शराब पीते हैं।

(८) जिज्ञासा से : देखूं तो शराब कैसी होती है? इसका असर कैसे होता है? ऐसी जिज्ञासा से भी लोग लत पकड़ लेते हैं।

इस तरह ८ प्रकार से लोग शराब पीते हैं। हम पीते नहीं है लेकिन हमें भी सचेत रहने की आवश्यकता है जिससे उपरोक्त अवसर आने पर भी शराब का स्पर्श न हो सके। कारण यह कि आजतक ऐसा कोई उदाहरण नहीं, जिनमें शराब पीने से फायदा हुआ हो। शराब पीने से तन, मन, धन तीनो प्रकार से नुक्शान ही होता है। इस के साथ ही समाज में जो अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा मिलती है। किसी ने लिखा है -

अग्नि बारे कोईकने, जहर चढे ते जाय।
दारु पीवे एक तो, कुटुंब कासण जाय॥

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का १३ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया गया

सर्वावतारी श्रीहरि के ही स्वरुप परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में आषाढ कृष्ण पक्ष-१० के दिन भावि आचार्य १०८ प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १३ वाँ प्रागट्योत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

विशाल संख्या में उपस्थित धर्मप्रेमी संत-हरिभक्तोने प.पू. लालजी महराजश्री, प.पू. महाराजश्री, तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तीनों श्रीहरिके अपर स्वरुपों का प्रातः ७-४५ बजे सुमधुर संगीत तथा पटाका तथा आतशबाजी के साथ स्वागत किया था। श्री नरनरायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप प्रसादी के सभामंडप में बिराजे थे। उसके बाद प्रति वर्ष की परंपरा अनुसार मंदिर के भूदेव पंडितो द्वारा वेद परंपरागत स्वस्तिवाचन, अर्चन-पूजन, तथा उसके बाद स्कीम कमिटी के सभ्य संतो तथा अग्रण्य हरिभक्तों द्वारा फूलहार तथा आरती से प.पू. लालजी महाराजाश्री का अर्चन-पूजन किया था। अहमदाबाद मंदिर में देवों के लिए नित्य फूलहार बनाने की सेवा करने वाले संत-हरिभक्तों की फूल मंडलीने प.पू. लालजी महाराजश्री को १३ फूट लंबा गुलाब का हार, मोरबी के प.भ. नवीनभाई माडंलीयाने श्रीहरि के तीनों अपर स्वरुपों को अंजीर का १३ फुट का हार झुलासन गाँव के श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने १३ फुट का लंबा हार पहनाकर तथा म्युझियम में अपना आर्थिक योगदान देकर धर्मकुल के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की थी।

उसके बाद सभी संतो का प्रतिनिधित्व करते हुए अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजीने प.पू. लालजी महाराजश्री के दीर्घायु होने की शुभेच्छा प्रार्थना व्यक्त की थी। उसके बाद में अभी के छोटे सभी संतोने अपनी वाणी में शुभ भावना की थी। प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वचन में जब-जब जन्मदिन आता है तब तब हमारे आयुष्य में से एक-एक वर्ष कम हो जाता है। उस वजह से भगवान की अत्यधिक प्रार्थना-पूजन-सत्संग करने का हेतु समझाया था। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने प.पू. लालजी महाराजश्री के जीवन का सुंदर प्रसंगोचित वर्णन करके जन्मजात सद्गुणों का संस्मरण करवाया था। इस प्रसंग पर धामोधाम से संत-महंतगण पधारे थे। सभा संचालन कोटेश्वर गुरुकल के शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था। प.पू. महाराजश्री की अनुमति से महंत स्वामी की घोषणा के अनुसार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगामी जन्मोत्सव (दशेरा) ईडर मंदिर में मनाया जायेगा। इस प्रागट्योत्सव प्रसंग का सुंदर आयोजन कोठारी पार्षद श्री दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से बलदेव स्वामी, जे.के. स्वामी, मुनि स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी कोठार स्टाफ आदि संत पार्षद मंडल ने प्रेरणात्मक सेवा प्रदान की थी। - शा. स्वा. नारायणमुनिदास

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अलौकिक झूलोत्सव दर्शन

पवित्र सावन महिने में भरत खंड के अधिपति राजाधिराज श्री नरनारायणदेव समक्ष नित्य नये कलाकारी युक्त बेनमून अद्भुत झूलोत्सव दर्शन का आयोजन किया गया था। जिसमें सूखे मेवे, फूलो के, चोकलेट, अनाज, चलणी नोट इस प्रकार भिन्न-भिन्न रुप में सजा कर हजारो हरिभक्तों को दर्शन का दिव्य लाभ दिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य १०८८ श्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री झूलोत्सव का दर्शन करके अति प्रसन्न हुए थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन तथा प्रेरणा से तथा भाविक हरिभक्तों ने झूलोत्सव के यजमान बनकर इसका अलौकिक लाभ लिया था। झूलोत्सव की अन्य सेवा में बलदेव स्वामी (बापु) जे.के. स्वामी, शा. मुनि स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदास, भूषण भगत, चैतन भगत, उर्मिक, तपनभाई, हार्दिक, वैभव उसी प्रकार सभी छोटे बड़े भाविक संत-पार्षद तथा हरिभक्तो ने सुदंर सेवा की थी। शाम के समय शहर की धार्मिक प्रजा बड़ी संख्या में आती थी। झूलोत्सव में भगवान को झुलाते हुए छोटे ब्रह्मचारी पुजारी, संत गण का दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे।

- शा. दिव्यप्रकाशदास

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुर्मास की विशेश कथा

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में चातुर्मास में प्रसादी के दिव्य सभा मंडप में प्रातः ७-३० से ८-०० श्रीमद् सत्संगिजीवन तथा शाम को ६-३० से ७-०० श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के वक्तापद पर हुई थी। ऐसे चातुर्मास में कथा श्रवण का अलौकिक लाभ लेना पुण्यशाली होता है। इसीलिए प्यारे भक्तों ऐसे सुदंर मोके का लाभ अवश्य ही लेना चाहिये।

- चेतन भगत

गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर सुदंर सेवा

गुरुपूर्णिमा के शुभ दिवस पर पू. जे.के. स्वामी की प्रेरणा से आकरुंद (ता. धनसुरा) गाँव के प.भ. धरणीबहन चंद्रेशकुमार पटेल तथा शिरालीबहन चंद्रेशकुमार पटेल परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सिंहासन के लिए सुदंर गालीचा तथा चटाई की सेवा की है। धन्य है उनकी सेवा की।

नई दिल्ली श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा नाथद्वारा मंदिर के महंत स.गु. स्वा. धर्मस्वरुपदासजी की प्रेरणा से अहमदाबाद के प.भ. बाबुभाई वाघजीभाई पटेल तथा अ.सौ. वसंतीबहन बाबुभाई पटेल की तरफ से हमारे न्यु दिल्ली श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजी (पूर्व महंत मथुरा) ने महापूजा तथा ठाकुरजी का महाभिषेक वेद विधिपूर्वक करवाया था।

महंत स्वामी, पूजारीश्री, नरेन्द्रभगत, बिरजु भगत तथा चंदु भगत ने अन्नकूट आदि की सेवा की थी। यहाँ प.भ. बिपीनभाई आदि अनेक हरिभक्तोंने दर्शन तथा महपूजा विधी का लाभ लिया था। - प्रवीणभाई कांचा, नाथद्वारा

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज का १२३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी का १२३ वाँ पाटोत्सव प.भ. बचुभाई प्रभुदास दर्जी परिवार की तरफ से ज्येष्ठ कृष्णपक्ष-२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से षोडशोपचार महाभिषेक विधिविधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद, जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी, हिंमतनगर, सापावाडा, ईडर, टोरडा तथा लालोडा आदि धामों के संतो की प्रेरक वाणी का लाभ प्राप्त हुआ था। सभा संचालन शा. घनश्याम स्वामी (माणसा महंत) ने संभाला था। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारकर यजमान के घर पधारे थे। - कोठारी हरिभाई

बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर

समस्त धर्मवंशी परिवार के आशीर्वाद से तथा शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर प्रथम ठाकुरजी की आरती पूजन करके (दोनों मंदिर में) हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन करके दिव्य लाभ लिया था। सावन महीने में नित्य झूलोत्सव करके ठाकुरजी को झुलाया जाता था।

शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा स्वा. ब्रह्मस्वरुपदासजीने भक्त चिंतामणी पर चा प्रकरण की कथा करके हरिभक्तों को दिव्य लाभ दिया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणादायी थी। - कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से विसनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सहजानंद किशोर मंडल के संयुक्त प्रसादीभूत श्री भीमनाथ महादेव जहाँ पथ्थर के हाथी को लडु खिलाकर अचेतज्न को चेतन बनाकर अपना सर्वोपरि ऐश्वर्य प्रगट किया था। उस दिव्य स्थान में १५ अगस्त रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में अहमदाबाद के शा. विश्वस्वरुपदासजी तथा श्री उदयनभाई महाराजने देव, आचार्यश्री तथा श्री नरनारायणदेव की महिमा का गुणगान किया था। देव, आचार्यश्री तथा श्री नरनारायणदेव की महिमा का गुणगान किया था। उसके बाद महादेवजी का अभिषेक तथा बिल्व पत्र से पूजा करके यजमानश्री की तरफ से प्रसाद वितरण किया गया था। सभा संचालन चिंतन कंसाराने किया था।

- श्री न.ना.देव युवक मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १८-७-२०१० के दिन अ.नि. पुरीबहन दलसुखभाई पटेल के स्मरण हेतु सत्संग सभा की गयी थी। ता. १९-७-२०१० से ता. २४-७-२०१० तक पुजारी पा. जसुभगत ने कथा का सुंदर लाभ दिया था। इस प्रसंग पर आर.टी.ओ. ओफिसर तथा उनके पुत्र घनश्यामभाई, विठ्ठलभाई रमणभाई आदि परिवारने लाभ लिया था।

- कोठारीश्री

नांदोल (ता. दहेगाँव)

नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोठारी विष्णुभाई तथा भीखाभाई तथा अंबालालभाई, आदि हरिभक्तों के साथ सहकार से ठाकुरजी के भिन्न-प्रकार का झुलोत्सव बनाकर झुलाया गया था। गाँव के हरिभक्तों को दर्शन का सुंदर लाभ दिया था।

- कोठारीश्री

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में ब्रह्मानदं सभा मंडप में गुरु पूर्णिमा के दिवस हजारो संत-हरिभक्तो ने प्रातः ८-०० बजे हमारे धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन करके गुरु ऋण अदा किया था । प्रासंगिक सभा में महंत शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन अनुसार चराडवा के महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने कथा-वार्ता में गुरु की महत्ता, माहात्म्य तथा उनके आश्रय बिना मोक्ष भी नहीं है तथा प.पू. महाराजश्री की स्वरुप निष्ठा दृढ करने को कहकर हरिभक्तों को रस पूर्ण कर दिया था । इस प्रसंग पर कोठारी स्वामी आत्मप्रकाशदासजीने मूलीदेश के गाँव के हरिभक्तों के साथ रखकर बहुत सुदंर आयोजन किया था । श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज आदि देवो का श्रृंगार पूजारी स्वा. जयप्रकाशदासजीने बहुत ही सुंदरता से किया था ।- नवलदान गढ़वी

लिंबड़ी मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महीने में जनमंगल कथा, समूह महापूजा के साथ घनश्याम महाराज सन्मुख तीनों मंदिरो में सावन महीने में कथा-धून का आयोजन किया गया था । शा.स्वा. वंदनप्रकाशदासने कथा का वांचन किया था । मंहत स्वामी की प्रेरणा से समग्र आयोजन हुआ था। - कोठारी स्वामी

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में २२ जून को संध्या आरती के समय पर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी के छठ्ठे आचार्य प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी तथा बहनों को दर्शन आशीर्वाद देने हेतु प.पू. बड़ी गादीवालाश्री पू. बिन्दुराजा तथा साथ में श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार तथा पा. वनराज भगत पधारे थे । हरिभक्तों को इतना आनंद हुआ था कि उसकी कोई सीमा नहीं थी । ''धन्य घड़ी आज की धन्य घड़ी'' । हरिभक्तों भाईओं तथा बहनों ने धर्मवंशी परिवार का दिव्य तथा भव्य स्वागत पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । दोनो छोटे बालकोने अपनी पोकेट मनी में से बचाकर रखी हुई रकम प.पू. बड़े महाराजश्री के श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में अर्पण की थी । .पू. बड़े महाराजश्री आज अनहद प्रसन्न हुए थे । तथा आशीर्वाद देते हुए कहा कि, आज मै दर्शन देने नहीं परंतु अपने हरिभक्तों का दर्शन करने हेतु आया हूँ । एकादशी केव्रत का पू. बड़े महाराजश्रीने सुंदर दृष्टांत के साथ व्रत का नियम करने की आज्ञा की थी । यहाँ के महंत स्वा.मीने इस प्रसंग पर हरिभक्तों के साथ सहकार से सुंदर आयोजन किया था। - प्रविणभाई

इसलीन मेरीलपार्क (अमेरिका) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ ११ जुलाई रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में से कई हरिभक्तगण पधारे थे । विशेष तो श्री सुव्रतकुमार तथा सौम्यकुमार पा. वनराज भगत के साथ पधारे थे । संतो में चेरीहील मंदिर के महंत शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, विहोकन मंदिर से गवैया स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी कोलोनीया के हरिनंदन स्वामी आदि संतोने कथावार्ता का सुंदर रसपान करवाया था । हरिभक्तो को सुंदर-सुख का एहसास हुआ था। - प्रविणकुमार

वोशिंग्टन डी.सी. आई.एस.एस.ओ. चेप्टर

९ जुलाई के शुक्रवार शाम ७-२० से १०-३० तक केटन्सवील की डेईझ ईन में सत्संग सभा हुई थी । जिस में कथा-वार्ता नित्य-नियम तथा कथा वार्ता नित्य-नियम तथा भोग ठाकुरजी के समक्ष किया गया था । कोलिनीया मंदिर में पू. हरिवल्लभ स्वामी ने स्नेह गीता में प्रेम लक्षणा भक्ति संबंधी कथा का लाभ दिया था ।

१७ जुलाई शनिवार की शाम ४-३० से ९-३० तक एक होल में सुंदर सत्संग सभा में कथावार्ता वचनामृत (२७३) वाचन, धून, कीर्तन, नित्य, नियम तथा ठाकुरजी का भोग-आरती की थी । हमारे एल.ए. मंदिर से शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी पधारे थे । स्वामीने डेढ़ घंटे तक सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का ध्यान करवा कर कथा का

अलौकिक लाभ दिया था। प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रीति बहुत ही सुंदर ढंग से चल रही है। - कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराज की कृपा-आशीर्वाद से सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर चल रही है। ता. २०-६-१० रविवार को समूह महापूजा तथा श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक आदि श्री रसिकभाई जानीने विधिवत करवाया था।

ता. २७-६-१० के दिन प.भ. चेतनभाई पटेल की तरफ से सभा हुई थी। ता. ४-७-१० के दिन नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन का आयोजन किया गया था। इस सभा के यजमान प.भ. महेन्द्रभाई पिंडोरीया बने थे। ता. १७-७-२०१० के शनिवार को मंदिर में श्री हनुमानजी का पूजन किया गया था। श्री रसिकभाई जानी (पूजारी) ने समग्र विधिकरवाई थी। ता. १८-७-२०१० के दिन प.भ. फेनीला पटेल की तरफ से सभा हुई थी। पुजारी रसिकभाई जानी को सेवा का सन्मान किया था। - तेजस बी. पटेल, सीडनी

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शिकागो के मीडवेस्ट स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी जयप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी की प्रेरणा से हमारे नरनारायणदेव गादी स्थापित इटास्का मंदिर में १२ वाँ पाटोत्सव ता. २५ जुलाई, २०१० से अगस्त, १, २०१० दरम्यान धूमधाम से मनाया गया।

आगे के दिन २४ वी जुलाई को १२ घंटे की अखंड धून करके हरिभक्तोंने घनश्याम महाराज को प्रसन्न कर दिया था। दूसरे दिन जुलाई २५ वी को पोथीयात्रा के बाद श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य सप्ताह-पारायण की शुरुआत की थी। जिस में व्यासपीठ पर सुप्रसिद्ध कथाकार सद्गुरु शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी ने (हाथीजण, गुकुकुल) विराजकर सुमधुर शैली में कथा का रसपान करवाया था।

इस महोत्सव के अंतर्गत श्री हरियाग, समूह में आदिनारायण महापूजा, देव का अभिषेक, महाअन्नकूट तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया था। इस महोत्सव में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री तथा देश-विदेश से संतो ने पधारकर शिकागो सत्संग समाज को आशीर्वाद तथा दर्शन का लाभ दिया था।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. श्री कमलेशभाई तथा मीनाबहन परिवार (राजपूरवाले, शिकागो) सह यजमान प.भ. श्री घनश्यामभाई तथा जशीबहन पटेल परिवार (मोखासणवाले) पारायण के मुख्य यजमान प.भ. किरीटभाई तथा गीताबहन पटेल परिवार (डांगरवा, सीनसीनाट), सह यजमान श्री विक्रमभाई तथा प्रविणाबहन पटेल के परिवार (असलाली) तथा अन्नकूट के यजमानश्रीओने सेवा का लाभ लिया था।

किचन कमिटी युवक मंडल तथा मंदिर के छोटे-बड़े हरिभक्तों ने साथ मिलकर प्रसंग की शोभा की वृष्टि की थी।

- वसंत त्रिवेदी, शिकागो

श्री स्वामिनारायण मंदिर सानजोशे

इस वर्ष श्री स्वामिनारायण मंदिर सानजोशे द्वारा जन्माष्टमी उत्सव उत्साहपूर्वक धूमधाम से मनाया गया। शा.स्वा. श्रीजी स्वामी का दिव्य लाभ सभी हरिभक्तों को मिला। इस के उपरांत फ्रेन्मेन्ट के हिन्दु मंदिर में त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा का आयोजन किया गया था। जिसका प्रारंभ एकादशी ९ अगस्त के दिन हुई थी। उस दिन कृष्ण जन्मोत्सव भी मनाया गया। श्रीजी स्वामी की वाणीने सभी का दिल जीत लिया था। शनिवार को सभी हरिभक्तोने रास गरबा का आयोजन किया था। जिस में कुल २८० जितने हरिभक्तों ने दर्शन, कथा, रास तथा महाप्रसाद का लाभ लिया था। इस प्रसंग के यजमान हमारे हरिभक्त श्री नंदुभाई तथा कान्ताबहन ने उनके दिवंगत पिता की याद में सेवा प्रदान की थी। रविवार को श्रीजी स्वामी के हाथों पूर्णाहुति हुई थी। - प्रशांत धोलकिया

नये व्रत उत्सव के निर्णय में सुधार के विषय में

श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद, मूली तथा भूज मंदिर तथा सभी विदेश के मंदिर में गत वर्ष के व्रतउत्सव के निर्णय में पायेउत्सव निधिअथवा फोन नंबर यदि कोई सुधार हुआ होनो आगामी वर्ष के नये निर्णय में पाटोत्सव का समय, फोन नंबर आदि सुधार प्राप्त करे या "श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय" श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम से तात्कालिक भेज दे।

આં.રા. મહિલા સત્સંગ શિબિર

દિવ્ય ભાસ્કર, ન્યૂજર્સી આવૃત્તિ



અમેરિકાની ધરતી પર ઘણા ગુજરાતી પરિવારો વસે છે. તેમાં ભારતીયને ગુજરાતી સંસ્કૃતિ ટકી રહે, વિશેષ કરીને ધર્મના સંસ્કારો અવિચળ રહે ને ભગવાન સ્વામિનારાયણનો દિવ્ય સંદેશ 'સર્વ બાવહિતાવહ'ને ઉપલક્ષમાં રાખી અમદાવાદ નરનારાયણ દેવ પીઠાધિપતિ આચાર્ય મહારાજ ૧૦૦૮ કૌશલેન્દ્ર પ્રસાદજી મહારાજના આશીર્વાદની સાથે સાથે અં.સૌ. પૂ. મોટા ગાદીવાળા બાના સાંનિધ્યમાં પંચદિનાત્મક આંતરરાષ્ટ્રીય મહિલા સત્સંગ શિબિરનું ભવ્ય આયોજન સ્વામિનારાયણ મંદિર સિનેમન્સનમાં કરવામાં આવ્યું હતું.

શિબિરમાં અમેરિકાના અલગ અલગ સ્ટેટ તેમજ લંડનથી બહેનોએ આવીને ભાગ લીધો હતો. ચારસોથી પાંચસો બહેનો આ શિબિરમાં જોડાઈ હતાં. પાંચ દિવસની આ શિબિરમાં અં.સૌ.પૂ. મોટા ગાદીવાળા બા સાથે અલગ અલગ ધર્મના વિષયો જેવા કે, ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ તથા આરતી, ઘંટ, શંખ વગેરે પૂજાના પ્રતીકો ઉપર ચર્ચા તેમજ વચનામૃત-શિક્ષાપત્રીની અંદર રહેલા ગહન વિષયો પ્રવચન કરી બહેનોને શાસ્ત્રોના અર્થો સમજાવ્યા હતા. શિબિરમાં યોગા, ડાયાબિટીસ, બ્લડપ્રેશર જેવા રોગોની માહિતી ડોક્ટર બહેનોએ ખૂબ સુંદર રીતે આપી હતી. યુવાન બહેનો માટે મેંદી, ચિત્રકામ જેવી રમતો ધર્મના અનુસંધાનમાં રાખવામાં આવી હતી. પૂ. ગાદીવાળા બા પાંચ દિવસ દરમિયાન ભારતીયને ગુજરાતી સંસ્કૃતિને આવરી દરેક બહેનોને આશીર્વાદ આપ્યા હતા. શિબિરની વ્યવસ્થામાં બપોરે લંચ, સાંજે ડિનર બે-ટાઈમ નાસ્તો તેમજ રહેવાની ઉત્તમ સગવડ સ્થાનિક કમિટીએ સુંદર રીતે કરી હતી. નાના બાળકોને રાખવાની ઉત્તમ સગવડ તેમજ તેમને અનુરૂપ રમતો સાથે સત્સંગનું જ્ઞાન આપવામાં આવ્યું હતું. પાંચમા દિવસે ભેટ, સ્વાગતને આભાર વિધિ દ્વારા શિબિરનું સમાપન થયું હતું.

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

बलोल-भाल (मूली देश) : प.भ. दाजीभाई केडुभाई परमार ता. ११-८-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

डेमाई (ता बायडः : प.भ. विरमभाई शामलभाई पटेल ता. २०-६-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

दहेगाँव : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के स्टोर कीपर श्री हर्षदभाई भलाभाई पटेल की धर्मपत्नी अ.सौ. हंसाबहन श्रावण कृष्णपक्ष-५ ता. १४-८-२०१० के शनिवार को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई।

गरोडीया (ता. साणंद) : प.भ. बलवंतसिंह धीरुभाई वाघेला ता. ३१-७-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए। जिनके अक्षरनिवासी होने से एक निष्ठावान सत्संगी की सत्संग को हंमेशा कमी महेसूस होगी।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।





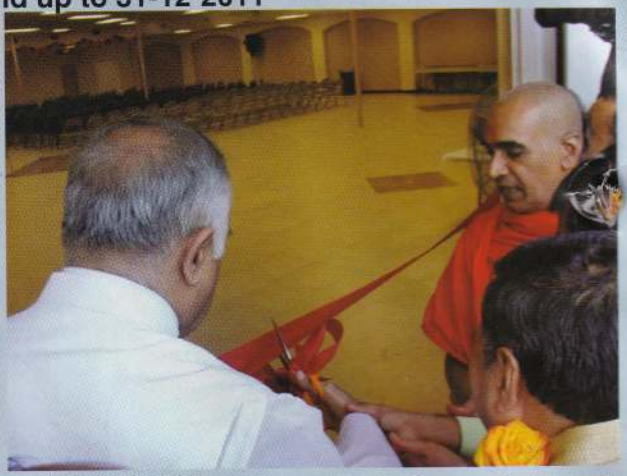
ी जयप्रकाशदासजी,
र में अन्नकूट दर्शन।
विर तथा बहनो द्वारा
क्स (एरिझोना) में
सजी तथा महेशभाई,

१) लेस्टर यु.के. मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन। (२) माणसा मंदिर में हिंडोला दर्शन। (३) जमीयतपुरा प्रभा हनुमान मंदिर का निरीक्षण करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) कांकरिया मंदिर में पारायण के यजमान प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुये तथा सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री। (५) फलोरिडा मंदिर में व्यास पीठ (वक्ता श्रीजी स्वामी) की आरती उतारते हुये यजमानश्री तथा समूह महापूजा में लाभ लेते हुये हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



अमेरिका के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा में ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ में पू. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी ।



फ्लोरिडा मंदिर में होल का उद्घाटन करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ मे शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी ।



Museum Year
March 2010 - March 2011

shree swaminarayan mandir

इ.स. २०१०-११ का वर्ष "म्युजियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युजियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है ।

उद्घाटन ८मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुनसुद तीज श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org